

भारतीय अन्वेषण विभाग

क ला क ल

2020 - 2021



आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना भू-बैधानिक आंकड़ा केन्द्र





वार्षिक अंक -2020-21

संरक्षक

सुनिल एस. फतेहपुर (कर्नल), निदेशक

संपादक मंडल/मुद्रण कार्य/
कंप्यूटर सेटिंग/मुख्य पृष्ठ सृजन

श्री डी.एस. मेहर , अधिकारी सर्वेक्षक/ राजभाषा अधिकारी
श्रीमती शुभा वी. नायर, स्थापना एवं लेखा अधिकारी
श्रीमती ई.मालिनी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
डॉ.नीलम कुमार बिड़ला, अभिलेखपाल
श्री पी. रवि किरण, सर्वेक्षक
श्री आर.वी. रघु, सर्वेक्षण सहायक

कृपया ध्यान दें : इस पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार हैं ।
यह आवश्यक नहीं कि संपादक इन विचारों एवं दावों से सहमत हो ।
पत्रिका बिक्री के लिए नहीं केवल आंतरिक परिचालन के लिए।

श्री नवीन तोमर
Shri Naveen Tomar
भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India



भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय
हाथीबड़कला एस्टेट, पोस्टबॉक्स नं. 37
देहरादून- 248001(उत्तराखण्ड), भारत
SURVEY OF INDIA
Surveyor General's Office
Hathibarkala Estate, Post Box No. -37
Dehradun- 248001 (Uttarakhand), India



संदेश

आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र की गृह पत्रिका "कलाकल" का विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी प्रकाशन हो रहा है यह अत्यंत हर्ष का विषय है ।

हिन्दी गृह पत्रिका के माध्यम से निदेशालय में कार्यरत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने अनुभवों व अनुभूतियों को राजभाषा हिन्दी में रोचक तरीके से अभिव्यक्त करने का अवसर मिलता है। जिन अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपनी लेखन क्षमता व प्रतिभा का परिचय देते हुए पत्रिका के पृष्ठों में अपना स्थान बनाया है, वह निश्चय ही सराहनीय है। उनके इस प्रयास से हिन्दी के प्रचार व प्रसार को बल मिलता है। जिस प्रकार निदेशालय के सभी सदस्य इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना अमूल्य योगदान देकर हिन्दी का सम्मान बढ़ाते रहे हैं वह प्रशंसनीय है। मेरा यह विश्वास है कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार व प्रसार हेतु पत्रिका के प्रकाशन के माध्यम से सार्थक प्रयास जारी रहेंगे।

मैं पत्रिका के लेखन व प्रकाशन कार्य से जुड़े सभी अधिकारियों कर्मचारियों को बधाई देता हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

नवीन तोमर
(नवीन तोमर)

भारत के महासर्वेक्षक

☎ 080 - 25532457
फैक्स 080 - 25536818
Email: zone.south.soi@gov.in



दक्षिणी जोन कार्यालय (Southern Zone Office)
कोरमंगला द्वितीय ब्लाक (Koramangla 2nd Block)
सर्जापुररोड (Sarjapur Road)
बेंगलुरु (Bengaluru)
कर्नाटक (Karnataka) - 560 034



संदेश

राजभाषा हिंदी की विशेषता उसकी व्यवहारिकता है। इसी कारण हिंदी को कार्यालयी एवं व्यावहारिकता के रूप में प्रशासनिक मामलों में प्रयुक्त किया जा रहा है।

मुझे प्रसन्नता हो रही है कि हिंदी के प्रचार- प्रसार तथा रूचि बढ़ाने के क्रम में इस वर्ष भी आंध्रप्रदेश एवं तेलंगाना भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र अपनी गृह-पत्रिका "कलाकल" का प्रकाशन कर रहा है।

विभिन्न भाषा-भाषी कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने अपने साहित्यिक व कल्पनापूर्ण विचारों को हिंदी के माध्यम से प्रस्तुत करने के जो प्रयास किए हैं, वह वास्तव में प्रशंसनीय हैं। आशा करता हूँ कि भविष्य में भी यह पत्रिका "कलाकल" सुंदर रूप में निखर कर सामने आएगी और राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में सहायक सिद्ध होगी। मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित सामग्री सुसज्जित होगी तथा इसमें रचनाकारों की प्रतिभा को उजागर करने के साथ-साथ हिंदी में काम करने का वातावरण तैयार करने में भी मदद मिलेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

पी. वी. श्रीनिवास
06/10/24

(पी. वी. श्रीनिवास)
अपर महासर्वेक्षक, दक्षिणी क्षेत्र




SURVEY OF INDIA
निदेशक का कार्यालय
OFFICE OF THE DIRECTOR
आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र
Andhra Pradesh and Telangana Geo-Spatial Data Centre
उप्पल, हैदराबाद-500039(ते.रा)
Uppal, Hyderabad- 500 039(TS)

निदेशक महोदय की कलम से.....

भारत के संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा को विकसित व समृद्ध बनाने के लिए मूलतः संस्कृत एवं गीण रूप से अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करने की जो बात कही गई है, उसके अनुरूप इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने जो विभिन्न भाषा- भाषी हैं, अपने साहित्यिक विचारों को हिंदी के माध्यम से प्रस्तुत करने का सोपान खड़ा किया है।

इस पत्रिका का उद्देश्य हिंदी के उपयोग में अधिकाधिक वृद्धि लाना और राजभाषा हिंदी में कार्य करने की दिशा में प्रोत्साहित करना है। इस संदर्भ में यह आशय है कि ये विभाग का एक सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

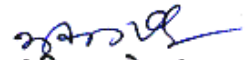

(सुनिल एस. फतेहपुर) कर्नल
निदेशक



संपादकीय

गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी आंध्रप्रदेश एवं तेलंगाना भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र अपनी गृह पत्रिका "कलाकल" का प्रकाशन कर रहा है। आशा है कि पत्रिका के लिए अधिकारियों व कर्मचारियों की सह भागिता से पूर्ण होने वाला कार्य भविष्य के लिए भी प्रेरणा दायक रहेगा।

इस अंक में प्रकाशित किए जाने वाले विभिन्न विषयों पर आधारित लेखकों के विचार, पाठकों के ज्ञानवर्धन के साथ-साथ मनोरंजन भी करेंगे। समस्त विश्व इस समय कोरोना महामारी से जूझ रहा है, और ऐसे समय में, पत्रिका के मुद्रण में सहयोग प्रदान करने वाले, रचनाकारों का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

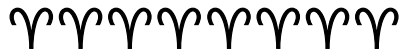

(डी.एस.मेहर)

अधिकारी सर्वेक्षक /
राजभाषा अधिकारी

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	लेख/रचनाएँ	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	कोरोना महामारी	श्री राकेश, अधिकारी सर्वेक्षक	1
2	पूजा के विधि विधान	श्रीमती श्रद्धा प्रधान, अधिकारी सर्वेक्षक	3
3	सूर्य नाड़ी और चन्द्र नाड़ी का महत्व	श्री यु. कृष्णकुमार, अधिकारी सर्वेक्षक	5
4	प्रातःकाल की सैर	श्रीमती ई.मालिनी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	6
5	मेरी प्यारी नौकरी	श्री मन्नु राम, अधिकारी सर्वेक्षक	8
6	वाक्यांश के लिए एक शब्द	श्रीमती ई.मालिनी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	9
7	पाँच तत्व	श्री पी. यादव्या, अधिकारी सर्वेक्षक	10
8	कोरोना वायरस ने किस तरह हमारे जीवन को प्रभावित किया	श्रीमती श्रद्धा प्रधान, अधिकारी सर्वेक्षक	11
9	कोरोना	श्री मन्नु राम, अधिकारी सर्वेक्षक	14
10	गज़ल	डॉ. नीलम कुमार बिड़ला, अभिलेखपाल	16
11	व्यावहारिक व्याकरण	श्रीमती ई मालिनी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	18
12	सूर्य चिकित्सा विज्ञान व रोगों के उपाय	श्रीमती श्रद्धा प्रधान, अधिकारी सर्वेक्षक	23
13	ज्ञान की बातें	श्री यु. कृष्णकुमार, अधिकारी सर्वेक्षक	25
14	बदलता समाज और नीची सोच	श्री धर्मवीर कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक	26

15	कोरोना महामारी में योग का महत्व	श्री धर्मवीर कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक	27
16	व्यक्तिगत संतुष्टि	श्री पी. रवि किरण, सर्वेक्षक	28
17	वर्ष 2019-20 के लिए मानदेय से पुरस्कृत कर्मचारियों की सूची	पत्राचार अनुभाग	29
18	नियुक्ति	पत्राचार अनुभाग	31
19	पदोन्नत कर्मचारियों की सूची	पत्राचार अनुभाग	32
20	निदेशालय में स्थानांतरण पर तैनात कर्मचारियों की सूची	पत्राचार अनुभाग	33
21	निदेशालय से बाहर स्थानांतरित कर्मचारियों की सूची	पत्राचार अनुभाग	36
22	सेवा निवृत्त/स्वैच्छिक सेवा निवृत्त हुए कर्मचारियों की सूची	पत्राचार अनुभाग	39
23	भावी पीढ़ी के बढ़ते कदम	41



कोरोना महामारी

(श्री राकेश, अधिकारी सर्वेक्षक)

कोरोना इस शब्द से आज विश्व घबरा रहा है। इस वाईरस ने उच्च, नीच, जात, पात, विकासशील, गरीब किसी को भी नहीं बख्शा। इसके लपेटे में हर प्रकार के लोग आते हैं। इसने कई देशों के अध्यक्ष, प्रधानमंत्री, कलाकार, खिलाड़ी, बुद्धि जीवी वर्ग को प्रभावित किया। कई लोग इस महामारी के शिकार हुए। अब तक तकरीबन 6 लाख लोगों की मौत हुई है। करोड़ो लोग पॉजिटिव पाए गए हैं। इस वाईरस का तोड़ आज तक कोई देश निकाल नहीं पाया। कई देश इस वाईरस को खत्म करने हेतु करोड़ों रूप एवैक्सीन बनाने के खर्च कर रहे हैं। लेकिन अभी तक सफलता प्राप्त नहीं हुई है। एक सर्वे के अनुसार अगर व्याक्सिन इस साल के अंत तक नहीं बनता है तो केवल भारत में हर साल 2,89,000 लोग कोरोना पॉजिटिव होंगे।

ऑक्सफर्ड युनिवर्सिटी, रूस सरकार, भारत बयोटेक, जैसी कई फार्मा संस्थाएं इस साल के अंत तक वैक्सीन बनाने का दावा कर रहे हैं जो के सारी मानव जाति के लिए खुशी का विषय होगा।

इस वाईरस का जन्म चीन के वुहान लैब में होने का समाचार है। लेकिन चीन सरकार इसे इनकार कर रही है। चीन की मंशा हो लेकिन इस वाईरस ने विश्व की आर्थिक शक्ति लोगों का रहन सहन, कई संस्थाओं का दिवाला होना, करोड़ों नौकरियों का हनन, गरीब मजदूरों के रोजगार के साधन आदि विषयों को विशेष तरह से प्रभावित किया है। विश्व के बहुत सारे देशों को फिर से आर्थिक रूप से सशक्त होने के लिए एक दशक लग सकता है।

इस वाईरस ने हमारे भारतीय समाज को विशेष रूप से प्रभावित किया है। कई परिवारों ने अपने परिजनों को खोया है। कई लोग अस्पतालों को लाखों रूपए का बिल चुकाकर बरबाद हो चुके हैं। कई वृद्ध लोगों को कोरोना से प्रभावित होने के उपरान्त अपने ही बच्चे ठुकरा चुके हैं। कई लोग अपने ही परिवार के सदस्य का अन्तिम संस्कार नहीं कर पाए।

इस वाईरस ने एक चीज बहुत अच्छी तरह से सारी मानव जाति को सीख दी है। चाहे आप कितने भी संपन्न हों या आर्थिक रूप से पिछड़े हों, मौत से आपका बचना काफी कठिन है। इसलिए हम सभी को यह सीख मिलती है कि मनुष्य जब तक जीवित रहेगा तब तक अपने अच्छे कार्यों से समाज के हित से काम करना चाहिए। लोभ, मोह, ईर्ष्या, ठग, हिंसा, आदि दुर्गुणों से परे रहकर मानव जाति के उत्थान के लिए हर इन्सान, समाज, देश को इस दिशा में सोचने और आचरण में रखने के लिए प्रयत्नशील रहना होगा। इस कोरोना के समय कई लोग और संस्थान अपनी ओर से भिन्न तरह के अच्छे कार्य कर रहे हैं जैसे राशन, मास्क, सानिटाइजर का बंटवारा, गरीबों के लिए अन्नदान, ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन, प्रवासी मजदूरों के लिए आवागमन (ट्रान्सपोर्टेशन) अन्न/फल का वितरण आदि कार्यों में अपना यथोचित दायित्व निभाया है।

कहते हैं कि हर बुरा समय हमारे लिए एक सीख लेकर आता है। इस वाईरस ने भी सारे समाज को न केवल अपने परिवार परिजनों का हित ही बल्कि सारी मानव समाज के प्रति अपने दायित्व निभाने के लिए बाध्य किया है जो के मानव कल्याण के लिए सुखद समाचार है।



कोरोना वायरस से बचाव कैसे करें

हालांकि, कोरोना वायरस के कारण काफी सारे लोगों अपनी ज़िंदगी से हाथ धोना पड़ा है, लेकिन यदि थोड़ी सावधानी बरती जाए तो लोगों की ज़िंदगी को बचाया जा सकता है।

इस प्रकार, कोरोना वायरस से इन 5 सावधानियों को बरतकर बचाव किया जा सकता है-

- ❖ हाथों को अच्छे तरीके से धोना
- ❖ बीमार लोगों से दूरी बनाए रखना
- ❖ खांसते या छींकते समय मुंह को ढकना
- ❖ कच्चा या अध कच्चा भोजन करना
- ❖ हेल्थ चेक अप कराना

पूजा के विधि विधान

(श्रीमती श्रद्धा प्रधान,अधिकारी सर्वेक्षक)

आज अधिकांश लोग अपनी समस्याओं के समाधान व सुख- शांति हेतु पूजा- पाठ करते हैं। पूजा- पाठ हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण अंग है। ऐसे में आवश्यक होता है कि लोगों को इसके सही स्वरूप की जानकारी हो। इसी संदर्भ में कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रस्तुत हैं :-

- **उपासना में तिलक का महत्व** :- प्रत्येक उपासना में तिलक का विशेष महत्व है। सामान्यतः तिलक रोली या कुंकुम से किया जाता है। किंतु अपने इष्टदेव को प्रिय सामग्री का तिलक करने पर साधना का त्वरित फल प्राप्त होता है। तिलक करने का स्थान, सामान्यतः तिलक भृकुटि (दोनों नेत्रों के मध्य का स्थान) में किया जाता है। किंतु शास्त्रों में शरीर के अलग- अलग बारह स्थानों यथा ललाट,हृदय स्थल, कंठ,दोनों बाहु, मूल, नाभि, पीठ व दोनों बगलों पर तिलक का विधान है। गृहस्थ को केवल भुकुटि पर करना चाहिए।
- **तिलक किस उँगली से करें** – शास्त्रों के अनुसार, अनामिका से तिलक करने पर शांति, मध्यमा से आयुवृद्धि,अंगूठे से पुष्टिदायक व तर्जनी से करने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है। विष्णु संहिता के अनुसार देव कार्य में अनामिका से, पितृ कार्य में मध्यमा से, ऋषि कार्य में कनिष्ठा से, तांत्रिक कार्यों से प्रथमा अंगुली का प्रयोग करना चाहिए।
- **तिलक सामग्री** –
 - पीत चंदन/ हरिद्रा/केसर – विष्णु आदि देवता व देव गुरु बृहस्पति हेतु।
 - रोली – आदि शक्ति (देवी) के समस्त रूपों व अन्य सभी देवताओं हेतु भी किंतु शिव पूजन में निषेध।
 - हरिद्राचंदन – श्री गणपति पूजन हेतु।
 - शिव पूजन – भस्म अथवा पीत अथवा श्वेत चंदन।
 - लक्ष्मी पूजन - केसर अथवा रोली।
 - सिंदूर – श्री हनुमान जी हेतु तथा समस्त तांत्रिक कार्यों में।
 - ऋषि पूजन – सफेद चंदन।
 - मानव पूजन- चंदन अथवा केसर।
 - पितृ कार्य – रक्त चंदन।

- **उपासना में पुष्प प्रयोग :-** किसी भी उपासना में पुष्प अर्पण का विशेष महत्व है। किंतु पुष्प अर्पण में भी विशेष सावधानी की आवश्यकता है। अशुद्ध, बासी, भूमि पर गिरे हुए, कीड़ों द्वारा खाए हुए, चुराए हुए या किसी अन्य व्यक्ति से मांगे हुए पुष्प उपासना में पूर्णतः त्याज्य हैं। कमल व कुमुद के पुष्प पाँच दिन तक बासी नहीं माने जाते हैं। बिल्व पत्र को पुनः धोकर अर्पण किया जाता है। बिल्वपत्र, पान तथा तुलसी के जीर्ण शीर्ण पत्र भी अर्पित किए जा सकते हैं। दिन के मध्याह्न अर्थात् 12 बजे के बाद पुष्प नहीं तोड़ने चाहिए। पुष्प कभी भी उल्टे अर्पित नहीं करना चाहिए। पुष्पांजलि में व बिल्व पत्र उल्टे अर्पित करने पर कोई दोष नहीं होता है।

माँ लक्ष्मी को सर्वाधिक कमल पुष्प ही प्रिय है। भगवान शंकर को धतूरा, भाँग व बिल्व पत्र प्रिय हैं। हनुमान जी को अड़हल के पुष्प प्रिय हैं। भगवान कृष्ण की पूजा में तुलसीदल न हो तो पूजा अधूरी मानी जाती है। भगवान गणपति को दूर्वादल प्रिय हैं।

भगवान शंकर कोकेत की अथवा कुन्द पुष्प, श्री हरी विष्णु पर धतूरा पुष्प याफल, देवी माँ पर आक के पुष्प, सूर्य देव पर तगर का पुष्प व हनुमान जी को गुलाब के पुष्प कभी अर्पित नहीं करने चाहिए।

प्रदक्षिणा विचार - प्रदक्षिणा का अर्थ होता है अपने इष्ट की परिक्रमा करना जो शास्त्रानुसार निम्न है :

- माँ चण्डी मंदिर - एक परिक्रमा
- सूर्य मंदिर - सात परिक्रमाएँ
- श्री गणेश मंदिर - तीन परिक्रमाएँ
- शिव मंदिर - साढ़े तीन परंतु किसी – किसी ग्रंथ के अनुसार आधी परिक्रमा
- श्री हरि विष्णु मंदिर - चार परिक्रमाएँ

संकलन – गूगल से साभार



सूर्य नाडी और चन्द्र नाडी का महत्व

(यु. कृष्ण कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक)

जीवन और मृत्यु के बीच की डोर हमारी नाक से निकलने वाली साँस ही है। जब तक ये साँस है, जीवन है और इस डोर का टूटना ही मृत्यु है। साँस में न केवल स्वास्थ्य का खज़ाना छुपा है बल्कि जीवन के हर छोटे-बड़े कार्यों की सफलता के लिए यह साँस हमें अपनी भाषा में कुछ न कुछ कहती है। नाक में दोनों छिद्रों में बहता श्वास स्वर कहलाता है। बाई नासिका में चंद्र स्वर और दाई नासिका में सूर्य स्वर बहता है। चंद्र स्वर में इडा नाडी होती है, यह स्वर ठंडी प्रकृति का होता है। जब साँस इससे आती-जाती है तब शरीर में ठंडकपन का अनुभव होता है वह स्वर हमारे दाएँ मस्तिष्क को सक्रिय बनाता है। इसी तरह सूर्य स्वर में पिंगला नाडी होती है यह स्वर गर्म प्रकृति का होता है। जब, साँस दाँए से आती-जाती है तब शरीर में गर्मी आती है। यह स्वर हमारे बाएँ मस्तिष्क को सक्रिय करता है।

सुबह उठने के बाद से लगभग एक घंटे तक एक स्वर चलता है और फिर यह स्वर शरीर की आवश्यकता के अनुसार अपने आप बदलता रहता है और जो साँस अभी बाई नाक से आ रही थी वो दाएँ से बहती लगती है ये स्वर परिवर्तन बड़ी सूक्ष्मता से होता है और व्यक्ति को इसका अनुभव तक नहीं हो पाता। जब स्वर बदलता है तब कुछ समय के लिए ऊर्जा मस्तिष्क के मध्य भाग में बहने लगती है जिसे सुषुम्ना कहते हैं। यह सुषुम्ना नाडी आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण होती है। यह मध्य नाडी-चक्रों में बहती ऊर्जा को उर्ध्वगामी कराती है। यह स्वर कुछ समय अर्थात् तीन से चार मिनट के लिए ही होता है। जब यह स्वर चलता है तब व्यक्ति में हल्कापन और मन की शांति का अनुभव होने लगता है। ध्यान में बैठने से सुषुम्ना नाडी ज्यादा चलती है ऐसे ही किसी मंदिर या धार्मिक स्थान में जाने से सुषुम्ना नाडी खुल जाती है। इसी स्वर को व्यवस्थित करने के लिए प्राणायाम किया जाता है जिससे इन स्वरो में ठीक प्रकार से ऊर्जा का प्रवाह होकर शरीर स्वस्थ बना रहता है। योग शास्त्र का कहना है कि स्वर के गड़बड़ाने से ही रोग पैदा होते हैं और प्राणायाम के द्वारा इन्हीं स्वरो को फिर से व्यवस्थित करके रोग को ठीक किया जाता है।

स्वर शास्त्र यह भी बताता है कि किस स्वर के चलने पर क्या करें और क्या न करें। जैसे बाएँ स्वर के चलने पर स्थिर काम करने चाहिए और दाएँ स्वर के चलने पर शारीरिक परिश्रम के कार्य करने चाहिए तो थकान नहीं होगी। सुषुम्ना के चलने के समय ध्यान, भक्ति, स्वाध्याय में रहना चाहिए क्योंकि सुषुम्ना के चलने के समय पर अन्य कोई और काम सिद्ध नहीं होता। दिन में सूर्य नाडी और रात के सूर्य चंद्र नाडी का चलना उचित रहता है। शास्त्र यह भी कहता है कि दूर देश जाना हो तो चन्द्र नाडी और समीप देश जाना हो तो सूर्य नाडी में गमन करें। दाएँ स्वर में भोजन करें और बाएँ स्वर में जल पीएँ। घर से निकलते समय जो स्वर चल रहा हो यदि वही पैर पहले बाहर निकाले तो कार्य पूर्ण होता है। इस प्रकार यह विज्ञान अनेक जानकारी देता है यह जानकारियाँ इतनी फायदेमंद रही होंगी की आज भी काफी बुजुर्ग लोग इन बातों का ध्यान रखते हैं।



प्रातःकाल की सैर

(श्रीमती इ.मालिनी, कनिष्ठ . अनुवाद अधिकारी)

प्रातःकाल की बेला बड़ी सुहावनी होती है। इस अवसर पर सर्वत्र स्फूर्ति और ताजगी के दर्शन होते हैं। वायु भी सुगन्ध से भरी होती है। यह प्रत्येक कार्य करने के लिए शुभ समय है। प्रातःकाल सूर्य देवता की पहली किरण का स्पर्श पाकर धरती का अंग-अंग सिहर उठता है। रात्रि का अन्धकार दिन के प्रकाश में बदल जाता है और रात की निस्तब्धता दिन के कोलाहल में खो जाती है। पक्षी अपने – अपने घोंसलों को छोड़कर उड़ते हुए दिखाई देते हैं। मंदिर में बजने वाली सुमधुर घण्टियाँ और मस्जिद से आने वाली अज्ञान कुम्भकरणीय निद्रा में सोये लोगों के लिए अलार्म का काम देती हैं।

उषा काल की इस स्वर्णिम बेला में मनुष्य को आलस्य त्यागकर प्रकृति की निःशुल्क अनुपम देन का लाभ उठाना चाहिए। बिस्तर से उठाने से पहले तो अवश्य आलस्य आता है पर एक बार बिस्तर छोड़ देने पर चित्त भ्रमण के लिए आकुल हो उठता है। घर में निकलते ही ज्यों – ज्यों हम आगे बढ़ते हैं, त्यों – त्यों हमें प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य के दर्शन होते हैं। इन अनोखी बेला में न तो दिन का शोर होता है और न ही कारखानों का धुआँ, गुबार एवं चित्त को अशान्त करने वाला दिन का कोलाहल होता है। प्रातःकाल के समय ऐसा लगता है कि प्रकृति रूपी नारी ने अपना रूप-सौंदर्य चहुं ओर छितरा दिया हो। उषाकाल में पक्षियों की तरह-तरह की बोलियाँ इतनी प्रिय लगती हैं मानों प्रकृति ने अपनी महफिल में अनेक प्रकार के गायकों को आमन्त्रित किया हो जो तरह- तरह के राग अलाप कर मनुष्यों के हृदय को मंत्र – मुग्ध करते हों।

प्रातःकाल का भ्रमण एक ऐसी अनुपम निःशुल्क औषधि है जो तन और मन को स्वस्थ रखती है। शारीरिक सौन्दर्य चाहने वाले मनुष्य प्रातःकाल के भ्रमण से अपने सौंदर्य को बढ़ाते हैं। इससे अनेक प्रकार के रोग दूर भागते हैं। शरीर में स्फूर्ति और दिन – भर कार्य करने की शक्ति आती है।

किसी ने ठीक कहा है जल्दी सो जाने और जल्दी उठ जाने से व्यक्ति स्वस्थ, सम्पन्न और सुयोग्य बनता है। प्रातःकाल शीघ्र उठकर भ्रमण के लिए बाग-बगीचे चले जाना चाहिए। इस समय पेड़ –पौधे ऑक्सीजन छोड़ते हैं और कार्बन – डाई – ऑक्साइड ग्रहण करते हैं। अतः इस समय भ्रमण करने वाले व्यक्ति को स्वास्थ्यदायक शुद्ध वायु का सेवन करने का अवसर मिलता है। इस तरह प्रातःकाल का भ्रमण प्रकृति की ऐसी निःशुल्क औषधि है जिससे आलस्य को सौंदूर भागता है। शरीर में स्फूर्ति और दिन – भर कार्य करने की शक्ति आती है। आयुब बढ़ती है, शरीर बलिष्ठ और सुंदर हो जाता है।

जीवन की सफलता के लिए मनुष्य को प्रातःकाल के भ्रमण की आदत डालनी चाहिए। प्रातःकाल के भ्रमण को स्वास्थ्य – लाभ होगा, मनुष्य का मानसिक विकास होगा एवं उसे प्रकृति के अनुपम सौंदर्य के दर्शन होंगे। अतः तन का स्वास्थ्य और मन ही प्रसन्नता प्रातःकाल की सैर पर निर्भर करती है।

उपरोक्त दर्शायी गयी सारी बातें प्रत्येक मानव अपने जीवन में लागू कर रहे हैं क्योंकि हर व्यक्ति अपना स्वास्थ्य बनाए रखना चाहता है। आजकल ज्यादातर लोग जैविक उत्पादों एवं योगा और प्रातःकाल भ्रमण पर विश्वास करते हैं और इनको अपने जीवन में सम्मिलित करने का प्रयत्न कर रहे हैं। मगर यह कोरोना महामारी ने किसी भी व्यक्ति को कहीं का नहीं छोड़ा।

इस वाइरस ने उनकी दिनचर्या को प्रभावित किया है। व्यायामशाला तो नहीं जा सकते हैं मगर योगा और व्यायाम तो घर पर ही कर सकते हैं फिर भी इस महामारी की इस परिस्थिति में प्रातःकाल का भ्रमण जो बाग-बगीचों में, खुली जगहों पर ताजी हवा में किया करते थे वह घर पर या घर की छत पर ही करने में मजबूर हो गए हैं।

भगवान से प्रार्थना है कि इस महामारी को जल्द से जल्द दुनिया से दूर करें ताकि लोग चैन की साँस ले सकें।



यदि कोई व्यक्ति कोरोना वायरस से पीड़ित है, तो उसे निम्नलिखित साइड-इफेक्ट्स से जूझना पड़ सकता है-

- ❖ नाक में संक्रमण होना
- ❖ साइनस होना
- ❖ गले में दर्द होना
- ❖ चक्कर आना

मेरी प्यारी नौकरी
(श्री मन्नु राम, अधिकारी सर्वेक्षक)

मेरी प्यारी नौकरी
मेरी सुख- दुख की साथी
हर मुश्किल में मेरे हाथ थामें
हर पल मेरे साथ रही
मेरी प्यारी नौकरी ।

तेरे साथ चलते-चलते वक्त कै से गुज़र गया ।
40 वर्ष का सफर यूँ झोंके सा निकल गया
मेरे काले बाल-सफेद हो गए
मेरी प्यारी नौकरी ।

यश, गौरव, सम्मान, वैभव सब तुमसे ही तो था
मेरा खुद पर अभिमान भी तो तुमसे ही था
सच कहूं तो तू मेरी पहचान थी
मेरी प्यारी नौकरी ।

तुम्हारे साथ बिताए वो पल
अकसर याद आएंगे
सह कर्मियों की वो हँसी ठिठोली
कैन्टीन की वो चाय
रह-रहकर सताएंगे ।
मेरी प्यारी नौकरी ।
मेरी प्यारी नौकरी ।



वाक्यांश के लिए एक शब्द

(श्रीमती ई.मालिनी, कनिष्ठ.अनुवाद अधिकारी)

क्रम संख्या		एक शब्द
1	अत्यधिक बोलने वाला	वाचाल
2	जिसका वर्ण न हो	अवर्णनीय
3	दिखने योग्य	दर्शनीय
4	जो सबका प्रिय हो	सर्वप्रिय
5	जिसके समान कोई दूसरा न हो	अद्वितीय
6	जो आकार विहीन हो	निराकार
7	जिसके हाथ में चक्र हो	चक्रपाणि
8	जिसका स्पर्श करना वर्जित हो	अस्पृश्य
9	जल में विचरण करने वाला	जलचर
10	जो उत्तर न दे सके	निरुत्तर
11	शक्ति के अनुसार	यथाशक्ति
12	जो नष्ट न होने वाला हो	अनश्वर
13	दूर की बात सोचने वाला	दूरदर्शी
14	जिसमें धैर्य न हो	अधीर
15	जो जानने की इच्छा रखता हो	जिज्ञासु
16	जो राजनीति जाने	राजनीतिज्ञ
17	जो कम खाता हो	अल्पभोजी
18	जहाँ पहुँचा न जा सके	अगम्य
19	मधुर बोलने वाला	मधुरभाषी
20	नियम के विरुद्ध बात	अपवाद
21	जो सहन-शक्ति रखता हो	सहिष्णु
22	जो आकाश में घूमता हो	नभचर
23	जो व्याकरण का ज्ञाता हो	वैयाकरण

पाँच तत्व

(श्री पी. यादव्या, अधिकारी सर्वेक्षक)

मानव शरीर की संरचना प्रकृति के पाँच तत्वों का समायोजन है। वे पाँच तत्व हैं – भूमि, आकाश, हवा, पानी और अग्नि।

ईश्वरीय रचनानुसार इन तत्वों की मात्रा विभिन्न प्राणियों में भिन्न होती है। उदाहरण के रूप में यदि हम हाथी को ले तो पाते हैं कि उसका शरीर 80%- मिट्टी के तत्व से बना होता है और बाकी जल से। यही कारण है कि हाथी मिट्टी व पानी से बहुत लगाव रखता है। एक दिन एक साधु ने देखा कि हाथी पानी में नहाने के बाद बाहर आकर अपने ऊपर मिट्टी डाल रहा है, तो साधु बोला कि हाथी में मिट्टी का अंश अधिक रहता है, इसलिए उसका वजन भी अधिक होता है। पक्षियों का वजन कम होता है, क्योंकि उनका संबंध वायु से रहता है। एक छोटा कीड़ा बहुत फुर्तीला होता है और उसका वजन भी कम रहता है, अर्थात् उसमें मिट्टी का अंश कम होता है। कहते हैं कि साँप में तेज़ होता है जो अग्नि का अंश है। यह अकसर देखा गया है कि साधुओं की आयु लंबी होती है। इसका कारण है कि वे योग प्रणायाम करते हैं और कम खाकर वायु का सेवन अधिक करते हैं। यह सब ईश्वरीय रचना के अधीन आता है। जिसमें जो तत्व अधिक होगा वह उसी से प्यार करता है, उसी के साथ रहना चाहता है। भारतीय परंपरा में मानव की मृत्यु के बाद उसका दाह-संस्कार कर दिया जाता है और तब ये पाँचों तत्व प्रकृति में विलीन हो जाते हैं। अर्थात् मिट्टी-मिट्टी में, जल-जल में, अग्नि- अग्नि में, वायु-वायु में और आकाश तत्व आकाश में विलीन हो जाते हैं।

- ❖ सबसे प्यारी, सबसे न्यारी,
हिंदी है हमारी राष्ट्रभाषा।
- ❖ प्यारी सी है वो अभिलाषा,
हिंदी है हमारी मातृभाषा।

कोरोना वायरस ने किस तरह हमारे जीवन को प्रभावित किया ।

(श्रीमती श्रद्धा प्रधान,अधिकारी सर्वेक्षक)

कोरोना वायरस का कोविड -19 का संबंध वायरस के ऐसे परिवार से है जिसके संक्रमण से खाँसी, जुकाम, साँस लेने में तकलीफ जैसी समस्या होती है। यह वायरस मानव के बाल से भी 900 गुना छोटा लेकिन बहुत ही ,खतरनाक व संक्रामक है। ऐसे लोग जिनके शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम है या फिर वे किसी गंभीर बीमारी जैसे रक्तचाप, शर्करा या हृदय रोग से ग्रसित हैं, उनके लिए यह वायरस जान लेवा भी हो सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार इस वायरस की रोकथाम के लिए अभी तक कोई टीका नहीं बना है और पूरे विश्व को अपनी चपेट में लेने तथा लाखों जानें लेने की वजह से इस बीमारी को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने महामारी घोषित किया है। इस रोग की उत्पत्ति दिसंबर 2019 में चीन के वुहान शहर में हुई और तब से लेकर अब तक पूरे विश्व को अपनी चपेट में लेते हुए इस वायरस ने विश्व में उथल-पुथल मचा दी है।

कोरोना वायरस का हमारे जीवन पर प्रभाव

इतिहास के अनुसार किसी भी तरह की महामारी से विश्व की आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक स्थिति पर बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ता है। कोरोना वायरस रूपी महामारी ने भी हर तरह से हमारे जीवन व देश दुनिया को प्रभावित किया है जिसका असर हमारे दैनिक जीवन में हम लगातार महसूस कर पा रहे हैं। सारी परिस्थितियाँ, दैनिक कार्य – कलाप व जीवन शैली पूरी तरह से परिवर्तित हो चुकी है जिस तरह से हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, ठीक उसी तरह कोरोना वायरस के भी कुछ सकारात्मक व कुछ नकारात्मक पक्ष हैं। जिनके बारे में हम विस्तार पूर्वक वर्णन कर रहे हैं –

- **सकारात्मक पक्ष** - कोरोना वायरस रूपी महामारी ने जहाँ लोगों में तकलीफ व डर पैदा किया वहीं इसके कुछ सकारात्मक पहलू भी हैं जिसने हमारे जीवन को एक नई दिशा दी, जो निम्नवत है -
 - **नमस्ते से शुरुआत करते हैं** – दोनो हाथों को जोड़कर नमस्ते करना हमारे देश की बहुत ही प्राचीन व सुंदर परंपरा है। परंतु समय के साथ आधुनिक होते हुए लोगों ने इस परंपरा को भुलाकर हाथ मिलाने या हैंडशेक करने को अभिवादन का तरीका बना लिया। किंतु कोरोना वायरस के संक्रमण के डर से डॉक्टरों ने लोगों को सामाजिक दूरी बनाते हुए अभिवादन के लिए शेक हैंड की जगह दोनों हाथ जोड़कर नमस्ते करने की सलाह और इस तरह भारतीय संस्कृति कि इस सुंदर परंपरा का पालन आज सिर्फ भारत की ही नहीं अपितु समस्त विश्व कर रहा है।
 - **साफ सफाई बरतने की आदत-कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए** लोग सब साफ-सफाई को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बना रहे हैं। नियमित अंतराल पर अपने

हाथों को 20 सेकंड तक साबुन से धोना या सैनिटाईज करना आज हर किसी की आदत बन चुका है। अपने घर व बाहरी परिवेश को साफ व कीटाणु मुक्त रखने के लिए हर कोई प्रयासरत है। इस तरह लोगों में एक बहुत ही अच्छी आदत का विकास हो रहा है जो ताउम्र हमारे लिए लाभदायक है।

- **वर्क फ्रॉम होम संस्कृति** - कोरोना संक्रमण की वजह से सभी कार्यालयों ने अपने कर्मचारियों को घर से काम करने की छूट दी है। जिसकी वजह से एक नई कार्यालयी संस्कृति वर्क फ्रॉम होम का उद्भव हुआ। इस कार्यालयीन पद्धति की वजह से लोगों के दैनिक शैली में बहु परिवर्तन हुए।
- **किचन में तैयार हो रहे नए शेफ** - कोरोना की वजह से आज लगभग हर होटल व रेस्त्राँ बंद है और चाट-पकोड़े, नए नए व्यंजन, मिठाईयाँ, नमकीन आदि का लुत्फ उठाना मुश्किल हो गया है। इस स्थिति से बाहर निकलने के लिए आज घर की रसोई में ही नए नए प्रयोग हो रहे हैं। लोग टी.वी, इंटरनेट देख - देख आज घर की रसोई में ही नए- नए प्रयोग हो रहे हैं। जहाँ रसोई पहले महिलाओं की जिम्मेदारी थी, वहीं आज पुरुष भी बराबरी से रसोई कार्य में रूचि लेकर घर की महिलाओं का साथ दे रहे हैं।
- **सीखने की कला** - लॉकडाउन के समय को व्यतीत करने हेतु लोगों ने ऑनलाइन तरीके से नई - नई कला सीखने में रूचि दिखाई। गिटार से लेकर गायन तक, बागवानी से लेकर पाक-कला तक, पढ़ाई से लेकर शौक पूरे करने तक आज हर क्षेत्र में लोग ऑनलाइन कक्षा का लाभ उठा रहे हैं एवं अपने अंदर की कला को बढ़ावा दे रहे हैं। यह समय लोगों के लिए खुद के अंदर छिपी हुई प्रतिभा को ढूँढने व उसे निखारने का बहुत ही अच्छा मौका है। जो सारी जिंदगी के लिए लाभदायक रहेगा।
- **डिजिटल फ्रेंडली हुए हम**- कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए आज हर कोई नगद खरीदारी व भुगतान की जगह डिजिटल मार्ग का उपयोग कर रहा है। खरीदारी, बिल भुगतान, राशन खरीदारी, सब्जियाँ फल आदि खरीदना, बैंक के काम, पढ़ाई, स्कूली शिक्षा, कार्यालयीन काम और यहाँ तक भगवान के पूजा पाठ का भी आज ऑनलाइन व डिजिटल माध्यम से हो रहा है।
- **पर्यावरण में सुधार**-लोगों व वाहनों की आवाजाही कम होने के कारण वातावरण में फैले हुए प्रदूषण में निरंतर कमी आई। काफी दशकों के बाद लोगों ने हवा में प्रदूषण की कमी को महसूस किया व शुद्ध हवा में साँस ली। दिल्ली जैसे सबसे प्रदूषित क्षेत्र में लंबे अरसे के बाद यमुना नदी का पानी साफ पाया गया व ऐसे पक्षी देखे गए जो प्रदूषण की वजह से मर कर तकरीबन लुप्त हो चुके थे।
- **पारिवारिक प्रगाढ़ता** - ऐसे लोग जो अपनी व्यस्त दिनचर्या की वजह से अपने परिवार को समय नहीं दे पाते थे, उन्होंने लॉकडाउन के समय का भर पूरा फायदा उठाया व अपना समय अपने परिवार के साथ बिताया। पारिवारिक संबंधों में प्रगाढ़ता आई।

- **पुराने दौर में जाकर गाता मन-** कार्यालय न जा पाने व बाहरी लोगों से मिल पाने के कारण लोगों को अपने पुराने समय को याद करने का मौका मिला, पुराने एलबम खंगाले गए। दूरदर्शन में रामायण, महाभारत जैसे पुराने व शिक्षा परक कार्यक्रमों का फिर से प्रसारण हुआ व लोगों ने अपने पुराने दौर को याद करते हुए अपने बच्चों के साथ इन कार्यक्रमों का लुत्फ उठाया।
- **नकारात्मक पक्ष -**अधो वर्णित अनेक सकारात्मक पक्ष के बावजूद कोरोना वायरस के कुछ ऐसे नकारात्मक प्रभाव हैं जिन्हें किसी भी तरह से नजरअंदाज नहीं किया जा सकता जो कि निम्न वर्णित हैं -
 - **आर्थिक तंत्र का लड़खड़ाना** - कोरोना वायरस की महामारी व लॉकडाउन के कारण समग्र - विश्व की अर्थ व्यवस्था लड़खड़ा गई। पहली बार देश की जीडीपी बुरी तरह से गिर गई। जिसे रोकना लगभग नामुमकिन था और अर्थ व्यवस्था को पुनः खड़ा करने व सुचारू रूप से चलाने में अभी बहुत समय लगेगा।
 - **उद्योग व्यवस्था ठप्प हो जाना** - कोरोना की वजह से समस्त विश्व के लघु उद्योग, दीर्घ उद्योग, कृषि, आई. टी. पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। कई फैक्ट्रियाँ व दुकाने बंद हो गई व लोग बेरोजगार होकर भूखे मरने लगे। लोग नौकरी से निकाले गए व आईटी इंडस्ट्री में रिसेशन आ गया। किसानों के लिए अपनी फसल को बेचना मुश्किल हो गया व रखी हुई फसलें खराब होने लगीं। इस तरह समस्त उद्योग व्यवस्था उथल -पुथल होकर ठप्प सी हो गई। जो अभी तक पूरी तरह से जीवित नहीं हो पाई है।
 - **स्वास्थ्य प्रणाली का असफल होना** -कोरोना की महामारी ने हर देश को अहसास दिलाया कि उनकी स्वास्थ्य प्रणाली में कितनी खामियाँ हैं।हस्पतालों में बीमार मरीजों के उपचार हेतु पर्याप्त सुविधाएँ नहीं थी जिसके प्रभाव में कई लोग मौत के मुँह में समा गए। प्राइवेट हस्पतालों में इलाज हेतु लोगों का शोषण किया गया व इलाज का खर्च न उठा पाने वाले निम्न आय वर्ग के लोग मारे गए।
 - **गरीबों पर त्रासदी** - रोज कमाने व अपने परिवार का पेट पालने वाले निम्न आय वर्ग के लोग बुरी तरह से प्रभावित हुए। ऐसे लोगों के लिए अपने परिवार का भरण पोषण करना बहुत मुश्किल हो गया। कई परिवार सड़कों पर आ गये एवं भूख की वजह से लोगों की जानें चली गई।
 - **मानसिक तनाव** - परिवारों को न पाल पाने के मानसिक तनाव की वजह से कई लोगों ने आत्महत्या कर ली। बीमारी के डर व सामाजिक बहिष्कार की वजह से कई लोग अवसाद के शिकार हो गए। घरों में अकेले रहने वाले व वृद्ध लोगों में अवसाद की वजह से वे अनेक मानसिक बीमारियों का शिकार हो गए।

उपसंहार:कोरोना के जितने नकरात्मक पक्ष हैं, उतने ही सकारात्मक पक्ष भी हैं। इस मुश्किल घड़ी में लोगों ने मानवता का पाठ पढ़ते हुए एक दूसरे की मदद करना सीखा। कोरोना की रोकथाम के लिए टीके के आविष्कार हेतु सतत प्रयास किए जा रहे हैं व देर से ही सही एक दिन इसकी रोकथाम के लिए उचित व्यवस्था हो जाएगी। तब तक अपने मानसिक संबल को बनाए रखते हुए, एक दूसरे की मदद करते हुए, सुरक्षा नियमों का पालन करते हुए एक सकारात्मक जीवन बिताएँ, कोरोना की महामारी हमें यही सिखाती है।



कोरोना

(श्री मन्नु राम, अधिकारी सर्वेक्षक)

पंख यूँ आसमान में लटके

सूरज यूँ सर में अटके

आम क्यूँ खट्टे से लगे

इमली यूँ मीठी लगे

कपड़े हम धूप में डाले

पर झोकों में उड़ जाएं

भाईयों जरा पता करो

ग्रीष्म ऋतु में बसंत कहाँ आए।

आम, लीची सब बोतल में आए

पेड़ों में बस मंजर नजर आए

कुँओं की शीतलता का पता नहीं

ठंडे पानी का मजा फ्रिज़ से लाए

वृक्षों की छाया का कोई मोल नहीं

सब कूलर एसी में सुस्ता रहे हैं।

ये कैसा वक्त गुजर रहा
जहाँ वक्त का कुछ भी होश नहीं ।
सब अलग- अलग यूँ बैठे है,
जैसा कोई रोग है,
ये कोरोना के डर से
पूरी दुनियां में खौफ है
अब चले भी जाओ कोरोना
इस धरती इस अवाम से
कोई बतला दो इसे
यहाँ न कोई तेरा दोस्त है,
न ही ये तेरा देश है।



❖ हिंदी भाषा नहीं भावों की अभिव्यक्ति है,
यह मातृभूमि पर मर मिटने की भक्ति है ।

❖ दीप से दीप जलाए जा,
हिंदी भाषा का ज्ञान फैलाए जा ।

❖ अब ना कोई आकार दो ना कोई प्रकार दो,
बस हिंदी भाषा का ज्ञान दो ।

गज़ल

(डॉ. नीलम कुमार बिड़ला, अभिलेखपाल)

सोच लिया कि हमने मंजिल पाली है
खुश रहने को ये तरकीब निकाली है।

गए दौर में जिसकी पूजा होती थी
वही शराफत नए दौर में गाली है।

पीछा मेरा कोई बराबर करता है
दूर तलक यूँ सारा रस्ता खाली है।

गैर नहीं वो अपना ही होगा, जिसने
कल्ल किया और लाश छाँव में डाली है।

हर दम क्यों उखड़े – उखड़े से रहते हो
आदत तुमने “नीलम” मे कैसी डाली है।

गज़ल

(डॉ. नीलम कुमार बिड़ला, अभिलेखपाल)

जिंदगी एक पहेली सी नज़र आती है,
साथ रहकर भी अकेली सी नज़र आती है।
अब किसी ओर से आती नहीं घुँघरू की सदा,
जीस्त वीरान हवेली सी नज़र आती है।
दोस्तों अब भी सदाओं के घने जंगल में,
मेरी आवाज़ अकेली सी नज़र आती है।
किसके कूचे से निकल आई सबा क्या मालूम,
ये फिजा सारी नशीली सी नज़र आती है।
गुफ्तगू का वही अंदाज है आने दो “नीलम”,
यह भी उनकी सहेली सी नज़र आती है।

गज़ल

(डॉ. नीलम कुमार बिड़ला, अभिलेखपाल)

मेरी किस्मत को बिगड़ने से बचाए रखिए,

आप मेरे हैं, मुझे अपना बनाए रखिए।

दाग़ दिल अपना जिया पास बनाए रखिए,

जब तलक सुबह न हो, शम्मा जलाए रखिए।

कदम आगे न बढ़े मेरा, तो मेरी किस्मत,

कमसे कम हौसले - दिल तो बनाए रखिए।

मुझ तक आने की न तकलीफ़ गवारा कीजे,

अपना साया, मेरे साये से बचाए रखिए।

बिगड़े हाल तभी एक रोज़ संवर सकते हैं,

बात बिगड़े न, मेरी बात बनाए रखिए।

आपके हुस्न पे है, अहले हवस की नज़रे,

इस उजाले को, अंधेरो से बचाए रखिए।

आयें आँखों में तो, पी जाइए हँस के आँसू

ग़म अमानत है, अमानत को छुपाए रखिए।

कह गए हैं, तो वो आयेंगे यक़ीनन “नीलम”

अपनी महफ़िल को, बहर हाल सजाए रखिए।

व्यावहारिक व्याकरण

(श्रीमती ई मालिनी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी)

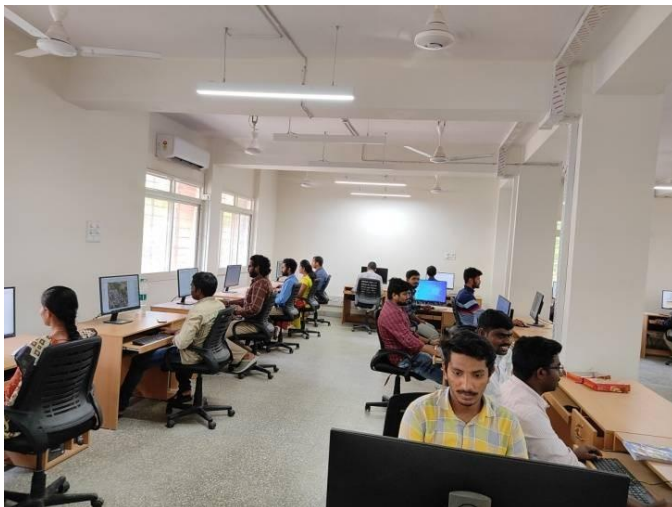
तत्सम- तद्भव शब्दों में अन्तर

संस्कृत के जिन मूल शब्दों का प्रयोग हिंदी में ज्यों का त्यों किया जाता है, उन्हें 'तत्सम' शब्द कहते हैं। जैसे - जल, नदी, कवि, गुरु, साधु आदि। जब कि वे शब्द "तद्भव" कहलाते हैं जो संस्कृत के मूल शब्दों में परिवर्तन किए हुए हों। जैसे - दूध, खीर, सिख, नाक, कान आदि।

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
घृत	घी	सूत्र	सूत
पक्षी	पंखी	सूर्य	सूरज
अस्थि	हड्डी	हस्त	हाथ
सप्त	सात	कर्ण	कान
मस्तक	माथा	पयंक	पलंग
पंच	पाँच	हस्ती	हाथी
अग्नि	आग	कुम्भाकर	कुम्हार
चंद्रिका	चाँदनी	गृह	घर
नव	नौ	उल्लूक	उल्लू
कोकिल	कोयल	भगिनी	बहिन
वधू	बहू	मयूर	मोर
अक्ष	आँख	शर्करा	शक्कर
उष्ट्र	ऊँट	पद	पांव
शीर्ष	सिर	चौर	चोर
हिय	हृदय	निद्रा	नींद
पत्र	पत्ता	कर्म	काम
मित्र	मित्त	सर्प	सांप
कार्य	काज	काष्ठ	काठ
क्षीर	खीर	पुराण	पुराना
दधि	दही	स्वप्न	सपना
शिक्षा	सीख	सत्य	सच

कार्यालय की कुछ झलकियाँ





फील्ड में कार्यरत हमारे अधिकारीगण





सूर्य चिकित्सा विज्ञान व रोगों के उपाय

(श्रीमती श्रद्धा प्रधान, अधिकारी सर्वेक्षक)

सूर्य ऊर्जा का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है। सूर्य की ऊर्जा से रोगों की चिकित्सा, चिकित्सा विज्ञान का एक चमत्कारिक किंतु अनछुआ तथ्य है। इसी से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण तथ्य आपके समक्ष प्रस्तुत हैं:

1. नीला तेल व रोगों के उपाय - एक सफेद रंग की बोतल लें व उसका लेबल उतारकर साफ करें। उसमें सरसों का तेल गर्दन तक ही भरें। ढक्कन लगाएँ व लकड़ी पर रख दें। इसके ऊपर नीले रंग का सेलोफिन पेपर लगा दें। इस बोतल को धूप में एक महीने तक रखें। आपको एक महत्वपूर्ण व बहुपयोगी दवा मिलेगी। इसे छत पर ही रहने दें व बोतल की धूल साफ करते रहें। इसकी थोड़ी मात्रा अन्य बोतल में ले कर उपयोग करें।

- यह नीला तेल बालों की रूसी, फोड़े फुंसियाँ दूर कर बालों को निरोग रखता है।
- चेहरे के दाग-धब्बे, झाईयों, कीले-मुँहासे, आँखों के नीचे के काले घेरे दूर करता है। चेहरे की चमक बढ़ाता है।
- ततैया – कीड़ा मच्छर काटने पर व जले हुए स्थान पर लगाने पर आराम देता है।
- नींद न आने पर सिर व कनपटी पर लगाकर सोयें।

2. नीले रंग का पानी व रोगों के उपाय – एक सफेद रंग की बोतल लें व उसका लेबल उतार कर साफ करें। साफ करके गर्दन तक पानी भरें। ढक्कन लगाएँ व लकड़ी पर रख दें। ऊपर नीला सेलोफिन पेपर लगाएँ। बोतल को ऐसी जगह रखें जहाँ सारा दिन धूप लगती हो। दो-तीन दिन के बाद आप यह पानी उपयोग कर सकते हैं। इस प्रयोग के लिए दूसरी बोतल भी तैयार रखें।

- यह पानी गला, गर्दन, मुँह, मस्तिष्क, सिर के रोगों के लिए अच्छी दवा है।
- यह पानी ठंडी तासीर वाला है। शरीर के अंदर कोई भी घाव, अल्सर, गर्मी व ज्वर के प्रकोप को दूर करता है।
- खाना खाने, चाय पीने या मीठा खाने के बाद। घूँट मुँह में भरकर कुल्ला करें। इससे दाँतों व गले के रोगों से बचे रहेंगे।

3. नारंगी/चॉकलेट/ब्राऊनरंग का पानी व रोगों पर उपाय – भूरे रंग की बोतल लें, साफ कर के गर्दन तक पानी भरें। ढक्कन लगाकर किसी लकड़ी पर तीन दिन तक धूप में रखें। तीन दिन बाद इसका सेवन करें।

- इस पानी से तिल्ली, आमाशय, हाथ – पैर, फेफड़े को फायदा होता है।

- भूख लगना / कम लगना, गैस, जोड़ों का दर्द, खाँसी, दमा, बच्चों के बिस्तर में पेशाब पर आराम देता है।
- ऐसिडिटी, लो बी पी, सुस्ती, जम्हाई, पीले नाखून, अधिक नींद में काम आता है।

4. लाल तेल व रोगों पर उपाय – काँच की बोतल में गर्दन तक तिल का तेल भरें व बोतल पर लाल सेलोफिन पेपर लगाएं। एक महीने तक धूप में लकड़ी के तख्त पर रखें।

- शरीर में दर्द, घुटनों में दर्द, पैरों में सूजन, शरीर में कहीं भी गाँठें आदि पर लगाने पर फायदा होता है।
- मोच व अंदरूनी चोटों में आराम देता है।
- शरीर में लकवा, पार्किन्सन वाली जगह पर लगाने से फायदा होता है।

4. हरे रंग का पानी व रोगों पर उपाय – एक काँच की हरे रंग की बोतल लें या सफेद बोतल पर हरे रंग का सेलोफिन पेपर लगाएँ। गर्दन तक पानी भरकर धूप में दो दिन रखें। उस पानी को आप तीनों वक्त भोजन के बाद एक-एक कप उपयोग कर सकते हैं।

- आँतों की सफाई, कब्ज, खून साफ होना, शरीर के विषैले तत्वों को बाहर निकालने में फायदेमंद है।
- आँखों के रोगों में आँखों को इस पानी से धोएँ।
- अल्सर, टायफाइड, दाद, पथरी, मूत्र रोग में फायदेमंद है।

3. सफेद रंग का पानी व रोगों पर उपाय - सफेद रंग की काँच की बोतल लें व गर्दन तक पानी भर कर तीन दिन धूप में रखें।

- यह पानी कीटाणु रहित व डिस्टिल्ड है। विटामिन डी मिलता है।
- बच्चों के दांत निकलने में सहायक है।
- इस पानी से हड्डियों व दांतों को शक्ति प्रदान होती है।

साभार - पंडित राम देवजी के दिव्य उपायों व दिव्य चिकित्सा से संकलित। कृपया जानकारी का प्रयोग स्वविवेक व चिकित्सकीय परामर्श के बाद ही करें।



ज्ञान की बातें

(यु. कृष्ण कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक)

गुणों के सहारे ही व्यक्ति
सफल हो पाता है
मगर
विनय और विवेक
साथ हो तो
शिखर छू जाता है ।

@@@@@

जब हम अकेले हो तब अपने विचारों को संभालें..
और जब हम सबके बीच हो तब अपने शब्दों को संभालें...

@@@@@

क्रोध आपका ऐसा हुनर है
जिसमें फँसते भी आप हैं,
उलझते भी आप हैं,
पछताते भी आप हैं,
और पिछड़ते भी आप हैं।
ज्ञान के बाद अगर
नम्रता का जन्म होता है
तो यही ज्ञान अमृत है।

@@@@@

बीत जाती है जिंदगी
ये ढूँढने में
कि ढूँढना क्या है
जबकि
मालूम ये भी नहीं
कि जो मिला है
उसका करना क्या है?



बदलता समाज और नीची सोच
(श्री धर्मवीर कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक)

समाज हजारों वर्षों से नित्य प्रगति कर वर्तमान स्थिति में पहुंचा है। हम मान व इस पर अभिमान भी करते हैं। लेकिन क्या वास्तव में हमारी मानसिकता और सोच भी महिलाओं को लेकर बदली है? समाज में हो रही घटनाओं को देख ऐसा तो प्रतीत नहीं होता। उन्हें सम्मान की नजर से न देख अक्सर ऐसे हिंसक कृत्य किए जाते हैं कि सोचकर लगता है कि क्या मानव समाज ऐसा होना चाहिए। इस पर थोड़ा विचार हमें करना चाहिए।

सतयुग और द्वापर युग में भी रावण और दुशासन थे।

ये तो कलि युग है

जाने किस किस रूप में दरिंदे आएंगे ॥

अपनी रक्षा खुद करना सीख लो स्त्री

अब कोई भगवान नहीं बचाने आएंगे।

कभी निर्भया तो कभी कोई और

रोज ऐसी घटनाएं हो रही ...।

नैतिकता पुरुषों की गई भाड़ में

समाज तो आंसू बहा बस सब भूलता रहा ॥

सब घर में होती है स्त्रियां, बहन और माँ के रूप में

फिर भी वहशी और दरिंदे ये सब कैसे भूल जाते हैं

जब

सजा मिले जब इनको फांसी में लटका बीच चौराहे में

रोज समाज के वह शी देख इसे, दहशत में तो जिएंगे ॥



कोरोना महामारी में योग का महत्व (श्री धर्मवीर कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक)

कोरोना की महामारी ने सम्पूर्ण विश्व को परेशान कर रखा है। लाखों लोग रोज इस से संक्रमित हो रहे हैं तो साथ ही अच्छे खान-पान और रोग प्रतिरोधक क्षमता के कारण स्वस्थ भी हो रहे हैं। लगभग 85% लोग भारत में इस बीमारी से ठीक भी हुए और मृत्यु दर भी मात्र 1.5 % पर आ गई है।

इसमें हमारे देश में लोगों द्वारा रसोई में आयुर्वेदिक मसालों (लौंग, इलायची, अदरक, दालचीनी, लहसुन, अजवाइन आदि) काखानों में उपयोग और साथ ही साथ योग को अपनाना भी एक महत्वपूर्ण कारण है।

विभिन्न देशों और भारत में भी कोरोना के इलाज के लिए वैकसिन पर अनुसंधान चल रहा है। परंतु अभी तक कोई सफलता नहीं मिली। तो ऐसे में हमें योग के महत्व को जीवन में समझना होगा और बिना कुछ खर्च और आलस किए कोरोना से लड़ाई में रहकर जीतना होगा। इसलिए

चलो आओ मिलकर करे योगा

और बना लें इसे नित्य जीवन का हिस्सा।

तो

जल्द ही कोरोना बन रह जाएगी, बस एक किस्सा ॥

24 घण्टे में 24 मिनट कर ले योगा।

तन स्वस्थ करे, मन स्वस्थ रखे इससे किसी को इनकार नहीं होगा ॥

स्वास्थ्य रूपी धन को सुरक्षित रखे, ये वरदान दे प्राणायाम और योगा।

भौतिक सुख सम्पत्ति निरर्थक बनाए, यदि स्वास्थ्य ठीक नहीं होगा।

भारतीय संस्कृति की देन है योगा।

विश्व के सभी मानव जाति को स्वस्थ और एक बनाए, ये है योगा की महिमा ॥

न किसी में भेद करे वरन सभी को जोड़ रखे।

ऐसी है हमारी धरोहर योगा ॥



व्यक्तिगत संतुष्टि

(श्री पी. रवि किरण, सर्वेक्षक)

एक शब्द जिसका अर्थ किसी के जीवन के शब्दकोश में नहीं मिल सकता है। यह शब्द, शायद पुराने दिनों में रहा होगा जब राजा, योगी और ऋषियों की दुनिया थी । लेकिन हम शायद ही कभी ऐसे व्यक्ति को देखते हैं जो उसके पास की चीजों से और जो भगवान ने उसे दिया है, उससे खुशी प्राप्त कर सकता है। इससे ऊपर कोई नहीं है, चाहे वह अंबानी हो, राजनेता हो, व्यवसायी हो या कंगाल हो ।

हमारे पितर जैसे बड़े परदादा ने अभ्यास किया होगा। लेकिन इस तरह की बातें नई पीढ़ी में अब और नहीं । हम आम तौर पर एक गलत धारणा रखते हैं कि यदि हमारे पास एक संतुष्ट जीवन और मन की शांति के लिए अच्छी रकम है, तो हम संतुष्ट और खुश हैं लेकिन क्या यह सच हो सकता है? नहीं ! हमारे आस-पास की स्थिति हमें उस तरह के लक्ष्य की ओर झुकाव नहीं होने देगी। मैंने 80 वर्ष से अधिक उम्र के बहुत से वृद्ध व्यक्तियों को देखा जिनके पास अच्छी-खासी रकम है, बच्चे विदेश में बस गए हैं, वे मोटी तनख्वाह कमा रहे हैं आदि, वे दुनिया को बता रहे हैं, कि "मैं अब संतुष्ट हूँ" प्रतिदिन मंदिर जाता हूँ मोक्ष और मुक्ति के लिए भगवान की सेवा करता हूँ। लेकिन जब कुछ मुफ्त धन प्राप्त करने का मौका मिलता है तो वही व्यक्ति अपने सभी आदर्शों और विचारधाराओं को अलग छोड़ देता है और कहता है कि केवल इस बार मैं करूंगा.----- जिसका अंत नहीं है ।

यहां तक कि कभी-कभी जब मैं कुछ परिस्थितियों के कारण मूड़ी / उदास होता हूँ तो मुझे लगता है कि यह मेरे लिए काफी है, लेकिन यह केवल कुछ घंटों तक ही रहता है और हो सकता है वह कुछ दिनों के लिए हो उससे ज्यादा नहीं । हम हमेशा स्वार्थी, ईर्ष्यालु और पैसे वाले होते हैं एक भी व्यक्ति इससे अछूता नहीं है।

पर अगर वैसा हो तो क्या !!!!

संतुष्टि और आत्म अनुशासन । यह वित्तीय समस्या या स्वास्थ्य समस्या के डर के बिना एक सुखी और शांतिपूर्ण जीवन जीने में बहुत मदद करेगा । मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि कम से कम एक बार जरूर कोशिश करें । इसे हासिल करने में हम सफल हो या न हो, लेकिन साल में एक बार कम से कम एक बार कोशिश करें और अंतर देखें। हमारे पास एक महान सांत्वना और मानसिक खुशी होगी और हम संतुलित होंगे जैसे हमने दुनिया को जीत लिया है।

वर्ष 2019-20 के लिए मानदेय से पुरस्कृत कर्मचारियों की सूची

क्रमसं	नाम श्री/श्रीमती/ कुमारी	पदनाम
1	पी. प्रेमकुमार	अधिकारी सर्वेक्षक
2	पी.श्रीनिवास	अधिकारी सर्वेक्षक
3	वाई. एन. पी. प्रभाकर	सहायक भंडार अधिकारी
4	बी. गोपाल राव	सर्वेक्षक
5	कोंडूर नरेश	सर्वेक्षक
6	सय्यद मौज़म	सर्वेक्षक
7	एस. वेंकटगिरी	सर्वेक्षक
9	एस. संतोषकुमार	सर्वेक्षक
10	आर.वी. रघु	सर्वेक्षण सहायक
11	बी.एस.वी.वरलक्ष्मी	मानचित्रकार ग्रेड -I
12	एस.के. मीना	मानचित्रकार ग्रेड -I
13	बी. वसंतलक्ष्मी	अभिलेखपाल ग्रेड-I
14	वी. सुरेश	पटल चित्रक ग्रेड- II
15	एम.नारायणराव	कार्यालय अधीक्षक
16	एम.श्रीनिवास	सहायक
17	बी.राजन बाबू	सहायक
18	पी.शांताकुमारी	सहायक
19	एम.वासुदेव	सहायक
20	वी.राजगोपाल	सहायक
21	एम. शैलजा रानी	आशुलिपिक
22	जे. कनकलक्ष्मी	मान चित्रकार ग्रेड -III
23	पी. इमाम कासिम	प्रवर श्रेणी लिपिक
24	ए.डेविड	प्रवर श्रेणी लिपिक
25	जयसिंह बाबू	एम. टी. डी
26	पी. सेलवराजू	एम.टी. एस
27	जे. शेशू शेखर	एम.टी.एस

28	सी. नारायणा	एम.टी.एस
29	बिंता देवी	एम.टी. एस.
30	जी. एबिनइजर	एम.टी. एस.

वर्ष 2021-21 के लिए मानदेय से पुरस्कृत कर्मचारियों की सूची

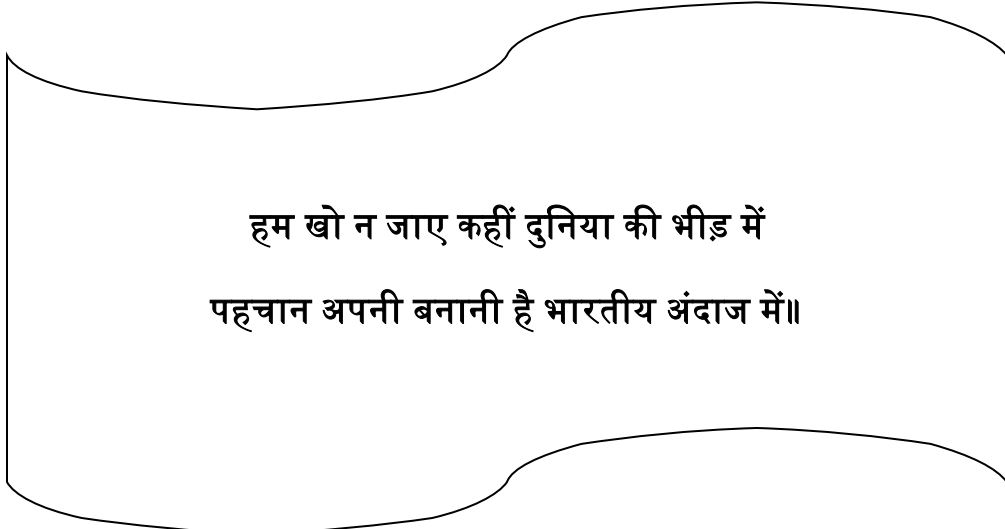
क्रम सं	नाम श्री/श्रीमती/ कुमारी	पदनाम
1	वाई.सुवर्धना	अधिकारी सर्वेक्षक
2	आर.वी. रघु	सर्वेक्षण सहायक
3	रवि किरन	सर्वेक्षक
4	एस.श्रीनिवास	सर्वेक्षक
5	बी.रशीला	सर्वेक्षक
6	टी.मधुसूदना राव	सर्वेक्षण सहायक
7	एस.शंतिभूषण राव	सर्वेक्षण सहायक
8	जी.शीला रानी	मान चित्रकार ग्रेड -I
9	डी. कृष्ण राव	मान चित्रकार ग्रेड -I
10	एस.कविता	मान चित्रकार ग्रेड -III
11	चंद्रपाल	सहायक
12	एन.शैलजा	सहायक
13	एम. बंगारी नायडु	सहायक
14	एम.लक्ष्मण कुमार	सहायक
15	के.ईश्वरय्या	एम.टी.एस
16	विजय राम	एम.टी.एस
17	एम. रामय्या	एम.टी.एस
18	बी. महेश	एम.टी.एस
19	आर. माणिक्यम्मा	एम.टी. एस
20	सुगिया देवी	एम.टी.एस

नियुक्ति

स्व. श्री वी.चैन्नय्या,खलासी की पत्नी श्रीमती वी. सुलोचना को दिनांक 03-12-2019 से एम. टी. एस.के पद पर करुणामूलक आधार पर नियुक्ति दी गई है।

स्व. श्री संगीत कुमार,खलासी की पत्नी श्रीमती एम. शशी कला को दिनांक 22-02-2021 से एम. टी. एस.के पद पर करुणामूलक आधार पर नियुक्ति दी गई है।

स्व. श्री जे. प्रकाशम,खलासी के पुत्र श्री जे. अक्षय को दिनांक 29-03-2021 से एम. टी. एस.के पद पर करुणामूलक आधार पर नियुक्ति दी गई है।



हम खो न जाए कहीं दुनिया की भीड़ में
पहचान अपनी बनानी है भारतीय अंदाज में॥

पदोन्नत कर्मचारियों की सूची

क्रम सं	नाम श्री/ श्रीमती	पदनाम	पदोन्नति की तिथि	जिस पद पर पदोन्नत हुए
1	डी.एस.मेहर	अधिकारी सर्वेक्षक	18.02.2020	अधीक्षक सर्वेक्षक
2	टी.के. साहु	अधिकारी सर्वेक्षक	18.02.2020	अधीक्षक सर्वेक्षक
3	वाई.के. राठौड़	अधिकारी सर्वेक्षक	18.02.2020	अधीक्षक सर्वेक्षक
4	पी. प्रेमकुमार	अधिकारी सर्वेक्षक	18.02.2020	अधीक्षक सर्वेक्षक
5	पी.के. लूहा	मानचित्रकार ग्रेड -I	19.06.2020	मुख्य मान चित्रकार
6	सी. अनिलकुमार	पटल चित्रक ग्रेड- II	01.01.2020	सर्वेक्षण सहायक
7	एम. वी. विजयकुमार	पटल चित्रक ग्रेड- II	01.01.2020	सर्वेक्षण सहायक
8	ए. शैलेश	प्रवर श्रेणी लिपिक	29.07.2020	सहायक
9	जे. बालाजी रातोड़	प्रवर श्रेणी लिपिक	06.08.2020	सहायक
10	जी.वी.के.मूर्ति	प्रवर श्रेणी लिपिक	29.07.2020	सहायक
11	ई. फिलीप्स राजू	एम.टी. एस.	27.12.2019	भंडारीग्रेड- IV
12	जी.वी.रंगाराव	एम.टी. एस.	19.02.2020	पटल चित्रक ग्रेड- IV
13	ए. डेविड	उच्च श्रेणी लिपिक	24.12.2020	सहायक
14	एम. लक्ष्मण कुमार	उच्च श्रेणी लिपिक	24.12.2020	सहायक
15	के. वेंकटेश्वरलू	उच्च श्रेणी लिपिक	24.12.2020	सहायक
16	के. भवानी	उच्च श्रेणी लिपिक	28.12.2020	सहायक
17	पी.वी.एस. राम प्रसाद	उच्च श्रेणी लिपिक	24.12.2020	सहायक
14	एस.के. मीरावली	मानचित्रकार डिविजन I	26.03.2021	मुख्य मानचित्रकार
15	एम. प्रेमलता	उच्च श्रेणी लिपिक	11.06.2021	सहायक

निदेशालय में स्थानांतरण पर तैनात कर्मचारियों की सूची

क्रम सं.	नाम श्री/श्रीमती/कुमारी	पदनाम	स्थानांतरण की तिथि	स्थानांतरण	
				से	को
1	पी.नागसमुद्रम	भंडारी ग्रेड- IV	03.10.2019	के.एवं ल. भू.स्था.आं.केन्द्र, तिरुवनन्तपुरम	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद
2	धर्मवीर कुमार	अधिकारी सर्वेक्षक	01.11.2019	भारतीय सर्वेक्षण एवं मानचित्रण संस्थान, हैदराबाद	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद
3	टी.के.साहू	अधिकारी सर्वेक्षक	08.11.2019	भारतीय सर्वेक्षण एवं मानचित्रण संस्थान, हैदराबाद	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद
4	विजय कुमार	अभिलेखपाल ग्रेड- IV	13.01.2020	उत्तरीय भू.स्था.आं.केन्द्र, देहरादून	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद
5	शुभा बी. नायर	स्थापना एवं लेखा अधिकारी	19.03.2020	भारतीय सर्वेक्षण एवं मानचित्रण संस्थान, हैदराबाद	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद
6	पी. सदगुना सामबाबू	अधिकारी सर्वेक्षक	28.05.2021	ओ.जी.डी.सी. भुवनेश्वर	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद (डी. ए. डब्ल्यू विशाखपट्टनम स्कन्ध)
7	आर. खंडेई	अधिकारी सर्वेक्षक	14.06.2021	बिहार जी डी सी	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद
8	ए.पी. उनियाल	अधिकारी सर्वेक्षक	16.08.2021	एम.ए एवं डी सी, देहरादून	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद
9	जे. मरियम्मा	पटल चित्रक ग्रेड -IV	20.08.2020	टी.एन.पी एवं ए.एन.जी.डी.सी, चेन्नई	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद

10	एम.एन.राम प्रसाद	अधिकारी सर्वेक्षक	03.09.2020	कर्नाटक भू-स्था. आं.केन्द्र,बेंगलूरु	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद
11	महुओं साई	अधिकारी सर्वेक्षक	15.09.2020	एम एवं जी जी डी सी, पुणे	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद
12	वाई.के.राकेश कुमार	पटल चित्रक ग्रेड -IV	10.09.2020	कर्नाटक भू-स्था. आं.केन्द्र,बेंगलूरु	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद
13	डी. नरसिंह राव	अधिकारी सर्वेक्षक	18.09.2020	जी.आई.एस. एवं. आर. एस., हैदराबाद	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद
14	ई. ओबलेश	पटल चित्रक ग्रेड -IV	06.10.2020	टी.एन.पी एवं ए.एन.जी.डी.सी, चेन्नई	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद
15	एस..वेंकटेश्वर राव	अधिकारी सर्वेक्षक	09.10.2021	जी.आई.एस. एण्ड. आर. एस, हैदराबाद	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद (डी. ए. डब्ल्यु विशाखपट्टनम स्कन्ध)
16	मेजर सौरभ धीर	उप अधीक्षक सर्वेक्षक	26.11.2020	एन.आई.जी एस टी हैदराबाद	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद
17	पंकज कुमार	अधीक्षक सर्वेक्षक	01.01.2021	एन. जी. डी.सी., देहरादून	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद
18	पी. मिलिंद कुमार	पटल चित्रक ग्रेड-IV	14.12.2020	कर्नाटक भू-स्था. आं.केन्द्र,बेंगलूरु	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद
19	टी. कासय्या	पटल चित्रक ग्रेड-IV	14.12.2020	कर्नाटक भू-स्था. आं.केन्द्र,बेंगलूरु	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद

20	एम. रंगा स्वामी	पटल चित्रक ग्रेड-IV	04.01.2021	टी.एन.पी एवं ए.एन.जी.डी.सी, चेन्नई	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद
21	डी. श्रीधर रेड्डी	पटल चित्रक ग्रेड -IV	12.01.2021	एम एवं ए जी डी सी, पुणे	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद
22	पी.सी. कोंडय्या	पटल चित्रक ग्रेड-IV	03.02.2021	टी.एन.पी एवं ए.एन.जी.डी.सी, चेन्नई	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद
23	टी. पी. मल्लिक	निदेशक	07.04.2021	एम एवं ए जी डी सी, शिलांग	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद
24	एम.एन. रमेशनाथ राव	सर्वेक्षण सहायक	07.09.2021	कर्नाटक भू-स्था. आं.केन्द्र,बेंगलूरु	आं. प्र. एवं ते.भू- स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद



सवाल करने की ताकत मानव उन्नति का आधार है ।

.....इंदिरा गांधी

निदेशालय से बाहर स्थानांतरित कर्मचारियों की सूची

क्रम सं.	नाम श्री/श्रीमती/कुमारी	पदनाम	स्थानांतरण की तिथि	स्थानांतरण	
				से	को
1	मिलिंद कुमार	पटल चित्रक ग्रेड- IV	03.09.2019	आं. प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद	कर्नाटक भू-स्था. आं.केन्द्र,बेंगलूरु
2	वाई.के.राकेश	पटल चित्रक ग्रेड- IV	30.09.2019	आं. प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद	कर्नाटक भू-स्था. आं.केन्द्र, बेंगलूरु
3	महेश्वर सिंह	अधिकारी सर्वेक्षक	23.10.2019	आं. प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद	भारतीय सर्वेक्षण एवं मानचित्रण संस्थान,हैदराबाद
4.	सय्यद अहम्मद	एम.टी. एस.	10.10.2019	आं. प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद	टी.एन.पी एवं ए.एन.जी.डी.सी, चेन्नई
5	कासिम वली शेख	एम.टी. एस.	10.10.2019	आं. प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद	टी.एन.पी एवं ए.एन.जी.डी.सी, चेन्नई
6	बलराम स्वामी	अधिकारी सर्वेक्षक	07.11.2019	आं. प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद	भारतीय सर्वेक्षण एवं मानचित्रण संस्थान,हैदराबाद
7	बी.श्रीनिवास राव	प्रवर श्रेणी लिपिक	03.12.2019	आं. प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र हैदराबाद	भारतीय सर्वेक्षण एवं मानचित्रण संस्थान,हैदराबाद
8	पी.प्रेमकुमार	अधिकारी सर्वेक्षक	30.12.2019	आं. प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद	आं.प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद (डी.ए.डब्ल्यू.वी)
9	एस. बाबू	अधिकारी सर्वेक्षक	09.01.2020	आं. प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद	टी.एन.पी एवं ए.एन.जी.डी.सी, चेन्नई

10	जे. मरियम्मा	एम.टी. एस.	29.01.2020	आं. प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद	टी.एन.पी एवं ए.एन.जी.डी.सी, चेन्नई
11	शैलबाला खंडूरी	मानचित्रकार ग्रेड-III	29.01.2020	आं. प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद	कर्नाटक भू.स्था. आं.केन्द्र, बेंगलूरु
12	बी. सुब्बय्या	एम.टी. एस.	28.02.2020	आं. प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद	कर्नाटक भू.स्था. आं.केन्द्र, बेंगलूरु
13	वाई.के.राठौड	अधीक्षक सर्वेक्षक	20.03.2020	आं. प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद	भारतीय सर्वेक्षण एवं मानचित्रण संस्थान, हैदराबाद
14	एम.नारायणा राव	कार्यालय अधीक्षक	01.06.2020	आं. प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद	भारतीय सर्वेक्षण एवं मानचित्रण संस्थान, हैदराबाद
15	एम.श्रीनिवास	सहायक	04.06.2020	आं. प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद	जी.आई.एस. एण्ड. आर. एस, हैदराबाद
16	एम. राकेश	अधिकारी सर्वेक्षक	18.06.2021	आं. प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद	एम.एवं जी जी डी सी,पुणे
17	डी.सी. अंभोरे	अधिकारी सर्वेक्षक	18.06.2021	आं. प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद	एम.एवं जी जी डी सी, पुणे
18	धर्मवीर कुमार	अधिकारी सर्वेक्षक	27.07.2021	आं. प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद	एम.ए एवं डी सी, देहरादून
19	टी.के.साहु	अधिकारी सर्वेक्षक	09.08.2021	आं. प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद	एम.एवं जी जी डी सी, पुणे

20	यू कृष्ण कुमार	अधिकारी सर्वेक्षक	11.08.2021	आं. प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद	कर्नाटक जी डी सी बेंगलूरु
21	टी.पी. मल्लिक	निदेशक	26.08.2021	आं. प्र.एवं ते.भू-स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद	भारतीय सर्वेक्षण विभाग, देहरादून

- ❖ मेरा अभिमान, देश की शान,
गर्व से कहो हिंदी ही स्वाभिमान।
- ❖ सोंधी सुगंध, मीठी सी भाषा,
गर्व से कहो हिंदी है मेरी भाषा।
- ❖ ताल से ताल मिलाए जा
हिंदी को आगे बढ़ाए जा।
- ❖ भांति-भांति की भाषा सबको आती,
पर हिंदी ही सबको भाती।

सेवा निवृत्त/स्वैच्छिक सेवा निवृत्त हुए कर्मचारियों की सूची

क्रमसं.	नाम श्री/श्रीमती/ कुमारी	पदनाम	सेवा निवृत्ति की तिथि
1	एम.लक्ष्मीनारायणा	एम.टी.एस	31.10.2019
2	ए.देवदानम	स्थापना एवं लेखा अधिकारी	30.11.2019
3	पी.के.कर	अधिकारी सर्वेक्षक	31.01.2020
4	बी.चिन्नकासैय्या	प्रवर श्रेणी लिपिक	31.01.2020
5	लीलाधर	एम.टी.एस	31.03.2020
6	एन.वी.एस.गुप्ता	अधिकारी सर्वेक्षक	30.04.2020
7	बी.नागेश्वरराव	एम.टी.एस	31.05.2020
8	रूमानंदी	मुख्य मानचित्रकार	31.05.2020
9	बी.एच.राव	अधीक्षक सर्वेक्षक	30.06.2020
10	जी. चंद्रय्या	एम.टी.एस	30.06.2020
11	एम.वेंकटेश्वरलू	एम.टी.एस	30.06.2020
12	वाई.चिन्नकासय्या	एम.टी.एस	30.06.2020
13	के.मधुसूधन	सर्वेक्षण सहायक	31.08.2020
14	ई. ओबलेश	मानचित्रकार ग्रेड-I	30.09.2020
15	मन्नूराम	अधिकारी सर्वेक्षक	31.10.2020
16	महिंदर कुमार	एम.टी.एस	31.10.2020

17	सी.एच रामलिंगम	अधिकारी सर्वेक्षक	31.12.2021
18	पंडव कुंटिया	सर्वेक्षण सहायक	28.02.2021
19	जी. संजीवय्या	एम.टी.एस	28.02.2021
20	शेक मीरावली	मुख्य मानचित्रकार	31.03.2021
21	एस. सेमुवेल	एम.टी.एस	31.05.2021
22	सी.एन. गेडम	अधिकारी सर्वेक्षक	30.06.2021
23	कासीम पीरा	एम.टी.एस	30.06.2021
24	बिंता देवी	एम.टी.एस	30.06.2021
25	आर. मल्लेश	एम.टी.एस	05.04.2021
26	पी. सुकुर	एम.टी.एस	31.07.2021
27	वाई.एन.पी. प्रभाकर	सहायक भंडार अधिकारी	06.08.2021



भावी पीढ़ी के बढ़ते कदम



श्री पेंडयाला श्रीनिवास, अधिकारी सर्वेक्षक की सुपुत्री कु. पेंडयाला मनस्विनी ने श्री चैतन्या कालेज, नारायणगुडा शाखा से इंटरमीडीएट परीक्षा में 946/1000 अंक प्राप्त किए। उन्होंने NEET परीक्षा में 519/700 अंक प्राप्त किए और प्रतिमा इंस्टीट्यूट और साइंसेस, करीमनगर, तेलंगाना में MBBS की सीट प्राप्त की।



श्रीमती चितप्पारेड्डी प्रवीणा, सहायक की सुपुत्री कु. चितप्पा केतना प्रणवी ने NEET परीक्षा में 519/700 अंक प्राप्त कर ए आईआईएमएस, (AIIMS) नागपुर, में MBBS की सीट प्राप्त की।



श्री के.श्रीनिवास, सर्वेक्षक के सुपुत्र मास्टर कोतावेंकट राहुल, ने श्रीचैतन्या कालेज, जुबलीहिल्स शाखा से इंटरमीडीएट परीक्षा में 895/1000 अंक प्राप्त किए। उन्हें JEE(MAIN) परीक्षा में 97.8 परसेंटाइल प्राप्त हुए और राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (पूर्व में आर. ई. सी), श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर में कंप्यूटर साइंस और इंजीनियरिंग शाखा की सीट मिली।



मैं धर्मवीर कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक, अपने पुत्र हर्ष वैभव की एक छोटी सी उपलब्धि के संबंध में बताना चाहता हूँ। पिछले साल कोविड 19 के कारण ज्यादातर बच्चों का अध्ययन प्रभावित हुआ। पर कुछ बच्चों ने उसका सदुपयोग भी किया।

हर्ष कक्षा 9 का छात्र है। उसने अपने स्कूल के ATL लैब में प्रोजेक्ट्स बनाने के कार्यक्रम में भाग लिया और उसकी टीम ने “Rain water analysis and ground water recharge “ से संबंधित एक प्रोजेक्ट बना कर क्षेत्रीय स्तर के रोबोफेस्ट प्रतियोगिता में भाग लिया और द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया।

उसके बाद राष्ट्रीय स्तर का ATL marathon में ऑनलाइन भाग लिया और नीति आयोग द्वारा देश के चुने 150 स्कूल टीम में अपनी जगह बनाई।

इस प्रदर्शन के आधार पर 10 सप्ताह का MIT Pune से स्किल डेवलपमेंट का MENTORSHIP कार्यक्रम में भाग लेने का मौका प्राप्त हुआ। उसमें उसे उत्पाद को कमर्शियली बनाने, मार्केटिंग STRATEGY, ONLINE प्रेजेंटेशन स्किल आदि NIT -K और आईआईएम इंदौर के एलुमनी से सीखने का मौका मिला। प्रत्येक सप्ताह 4 दिनों तक सीखा 5वे दिन देश के विशेष चुने लोगों के सामने प्रेजेंटेशन करना होता था।

इस बीच हर्ष ने इंडो रूस 3 rd AIM SERIUS प्रोग्राम में भाग लेने के लिए आवेदन किया। पूर्व के प्रदर्शन देख और ऑनलाइन साक्षात्कार के बाद हर्ष का इस कार्यक्रम में चुनाव हो गया। यह 2 सप्ताह का कार्यक्रम “ STATISTICAL ANALYSIS OF BIG DATA OF OLYMPIAD “ में था। टीम के 5 सदस्यों में 3 भारतीय और 2 रूसी नागरिक थे और मेंटर भी रूसी था।

पूरा कार्यक्रम कोविड 19 के लॉकडॉन समय में ऑनलाइन तरीके से चला। नई नई चीजें सीखने को मिली। साथ ही दिए गए टास्क को दिन रात मेहनत कर उनकी टीम ने पूरा किया। पूरे समय में काम के साथ उन्होंने रूसी मित्रों से अपने देश की सांस्कृतिक जानकारी भी सांझा की।

इस तरह कॉविड 19 के दौरान अगस्त से नवंबर तक चले विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेकर उसने नई चीजें सीखी और अपने स्कूल, राज्य और देश का भी नाम रौशन किया।



श्री एम.वी. विजय कुमार के सुपुत्र मास्टर प्रणय कुमार एक क्रिकेटर (विकेट कीपर और बल्लेबाज) हैं जिन्होंने वर्ष 2016-2017 के दौरान नेशनल स्कूल गेम्स में तेलंगाना राज्य का प्रतिनिधित्व किया है, उन्होंने एस जी एफ आई(SGFI) तेलंगाना द्वारा आयोजित अंतर जिला क्रिकेट टूर्नामेंट में हैदराबाद जिले का भी प्रतिनिधित्व किया है। वे हैदराबाद क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा आयोजित जूनियर ज़ोनल्स में भी खेल चुके हैं। वे एच सी ए के लिए अंडर 16 वर्ग में राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम, हैदराबाद में विजिटिंग श्रीलंका अकादमी की टीमों के साथ खेल चुके हैं।

वे हैदराबाद के जिमखाना ग्राउंड्स में अंडर 19 वर्ग में विजिटिंग ऑस्ट्रेलियाई अकादमी टीम के खिलाफ भी खेले हैं। वे एक मात्र विकेट कीपर बल्लेबाज थे, जिन्हें फंगेज स्पोर्ट्स एसोसिएशन द्वारा चुना गया था, जिन्हें पूर्व भारतीय ओपनर गौतम गंभीर द्वारा यूके में प्रशिक्षित किया जाना था।

वे हैदराबाद क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा आयोजित A1 डिवीजन (3 दिवसीय लीग) में खेल खेलते हैं। वे वर्ष 2017-2018 में CFI (CRICKET FEDERATION OF INDIA) भारत की क्रिकेट फेडरेशन, चेन्नई द्वारा आयोजित टूर्नामेंट में(CRICKET FEDERATION OF HYDERABAD) हैदराबाद की टीम का

हिस्सा थे, जहाँ न केवल भारत से बल्कि मलेशिया, पाकिस्तान, श्रीलंका की टीमों ने भी भाग लिया था। उन्हें के सर्व श्रेष्ठ विकेट कीपर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने भवान्स कालेज के लिए जूनियर और सीनियर लेवल, दोनों में रिप्रेजेंट किया और भवान्स की जूनियर कॉलेज टीम की कप्तानी की, जिसने EENADU ग्रुप द्वारा आयोजित EENADU CUP (दोनों तेलुगु राज्यों के लिए सभी कालेजों के लिए वार्षिक रूप से आयोजित) को जीता 2019-2020। वे वर्ष 2018-2019 और 2020-2021 में भवान्स की टीम का भी हिस्सा थे जिन्होंने साक्षी ग्रुप द्वारा आयोजित साक्षी कप (दोनों तेलुगु राज्यों के सभी जिलों के लिए वार्षिक रूप से आयोजित) जीता।

पिछले कई वर्षों से लगातार वे विभिन्न स्तरों पर और हैदराबाद क्रिकेट फेडरेशन HYDERABAD CRICKET FEDERATION (HCA) द्वारा आयोजित लीगों में अच्छा प्रदर्शन करते आ रहे हैं और उच्चस्तर पर अपना खेल खेलने के लिए हैदराबाद क्रिकेट एसोसिएशन के दरवाजे खटखटा रहे हैं। उन्हें कोविड -19 से पहले पांडिचेरी प्रीमियर लीग में खेलने का मौका दिया गया था। वह बीसीसीआई द्वारा VCAOO MANKAD TROPHY (U-19) TROPHY के लिए 2020-2021 के लिए HCA द्वारा चयनित संभावित सूची में है।

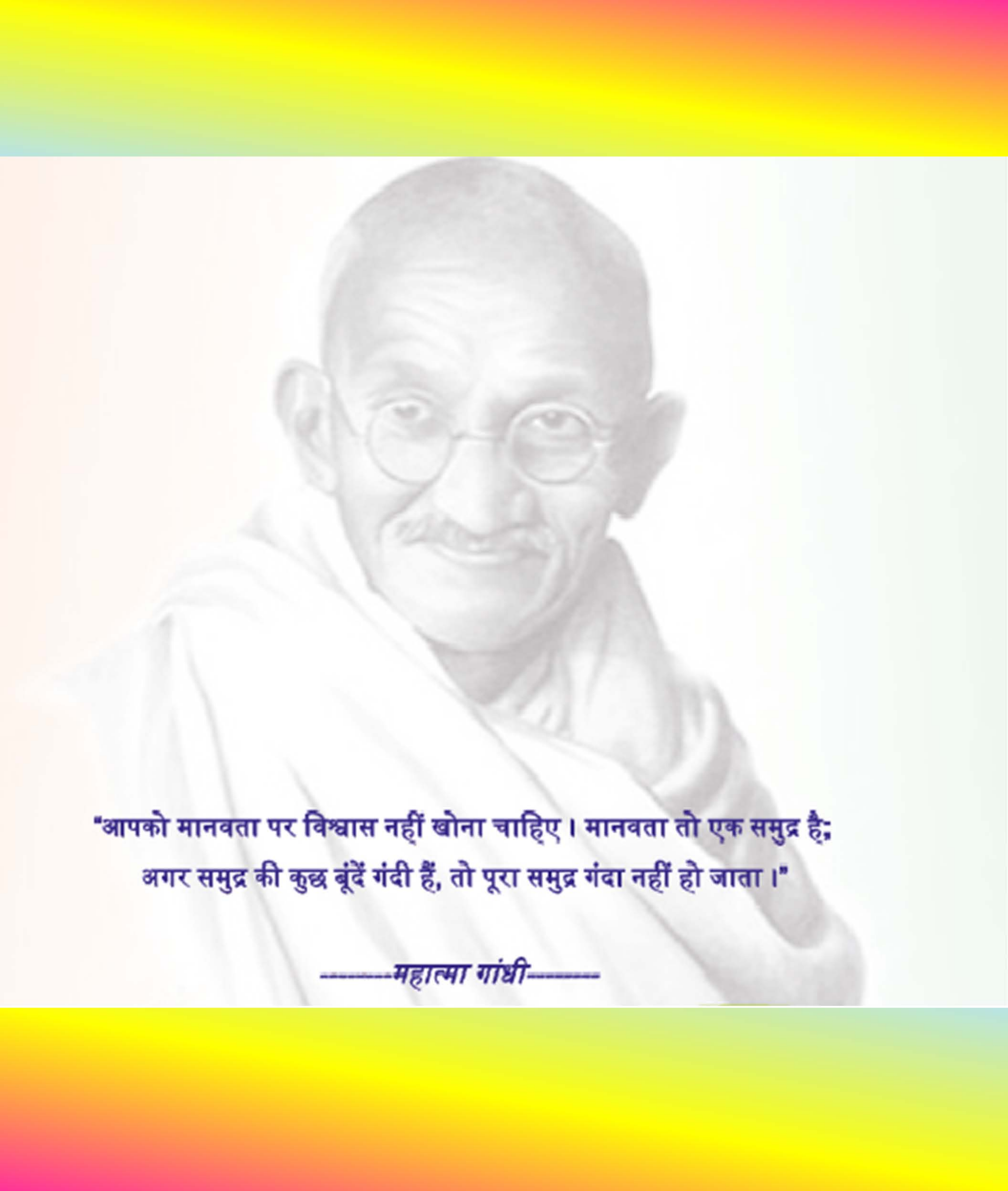
उन्हें अपने कठिन परिश्रम और अपने सभी कोचों द्वारा विशेष रूप से पूर्व भारतीय खिलाड़ी और बीसीसीआई के मुख्य चयन कर्ता श्री एम. एस के प्रसाद द्वारा उनके कौशल के लिए समर्पण और प्रतिबद्धता के लिए सराहा गया है।





NOTE 9 PRO
AD CAMERA

DISCOVERY
NOTE 9 PRO



**“आपको मानवता पर विश्वास नहीं खोना चाहिए । मानवता तो एक समुद्र है;
अगर समुद्र की कुछ बूंदें गंदी हैं, तो पूरा समुद्र गंदा नहीं हो जाता ।”**

————महात्मा गांधी————